Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

बाल–श्रम में संलग्न बाल श्रमिकों की शैक्षणिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 संदीप कुमार
असि0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र,
इं0 सि0 स्व0 सं0से0 राजकीय महाविद्यालय, पचवस
बस्ती, उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number : 100-104
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 15 Oct 2020
Published : 26 Oct 2020

सारांश– 'बाल–श्रमिक', जो विभिन्न कारणों से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सके थे, अथवा बीच में ही उन्हें अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी तथा 114 (38 प्रतिशत) 'बाल–श्रमिक', जो अशिक्षित थे, जब इन सभी बाल–श्रमिकों से यह प्रश्न पूछा गया कि यदि आप पढ़ना चाहते हैं तो; क्या आपके माता–पिता अथवा अभिभावक पढ़ाई का खर्च वहन कर सकते हैं? साथ ही बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने से सम्बन्धित प्रेरणापरक बातें भी बतायी गयी कि, आजकल सरकारी शिक्षण संस्थानों में बहुत अधिक शुल्क नहीं देना पड़ता है।

मुख्यशब्द – बाल–श्रम, बाल श्रमिक, शैक्षणिक, समाजशास्त्रीय,अध्ययन।

कहने को तो हम इंसान हैं पर सही मायनों में इंसान हमें शिक्षा ही बनाता है। आज की तारीख में शिक्षा की बात करें तो ये प्राण वायु की तरह हो गया है। शिक्षा का कार्य सिर्फ जानकारी इकट्ठा करना, तथ्यों को बटोर कर उन्हें आपस में मिलाना तथा अनुपयुक्त तथ्यों की मदद से या फिर कुतर्क की मदद से चीजों को सत्यापित करना नहीं है। बल्कि शिक्षा का कार्य तो ऐसे मनुष्य तैयार करना है जो स्वयं में पूर्ण एवं प्रज्ञाशील हों। हमारे वर्तमान समाज में प्रज्ञाशील हुए बिना भी हम डिग्री प्राप्त कर सकते हैं, यांत्रिक रूप में सक्षम हो सकते हैं, खुद को बाजार के मांग के अनुरूप प्रशिक्षित कर सकते हैं पर हम इस बात को कैसे झुठला सकते हैं कि प्रशिक्षण सिर्फ कार्यकुशलता लाता है, पूर्णता नहीं। जो है उसे पूर्ण रूप से देख पाने की क्षमता जब तक विकसित नहीं होगी तब तक प्रज्ञाशीलता नहीं आएगी और प्रज्ञाशीलता के बिना शिक्षा अधूरा है। वैसे भी ऐसा विद्वान होने से क्या फायदा जो अपनी समझ अथवा बोध के लिए हमेशा जानकारियों एवं प्रमाण्य पर निर्भर रहता हो। वो समझ अथवा बोध भला जानकारियों से कहां आ पाती हैं, वो तो आत्मज्ञान से ही आ पाता है और आत्मज्ञान तभी आ सकता है जब हम स्वयं के होने के प्रति

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सजग हों, अपनी पूरी मानसिक प्रक्रिया के प्रति सजग हों और जब ऐसा होगा तभी हमारे व्यवहार में एक सकारात्मक बदलाव आ पाएगा, तभी हमारी चेतना संकीर्णता के बंधनों से मुक्त हो पाएगी। वास्तव में ये सही शिक्षा होगी।

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर प्रदेश के जनपद गोरखपुर के तहसील चौरी चौरा में लघु एवं घरेलू कुटीर उद्योगों में संलग्न बाल श्रमिक के शिक्षा की स्थिति का समाजशास्त्री अध्ययन किया गया है।

बाल–श्रमिकों की शिक्षा–

शोध कार्य में सम्मिलित किये गये सभी उत्तरदाता बाल–श्रमिकों काा सर्वेक्षण करने के पश्चात् जो आँकड़े प्राप्त हुए उनके आधार पर अग्रलिखित तालिका में आँकड़ों को वर्गीकृत करे दर्शाया जा रहा है–

उत्तरदाता 'बाल–श्रमिकों' की शिक्षा के स्तर का वितरण

क्रम सं०	बाल–श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	114	38.00
2.	प्राथमिक	54	18.00
3.	उच्च प्राथमिक	11	3.67
4.	पूर्व माध्यमिक	01	0.33
5.	ड्रप आऊट (विद्यालय छोड़ दिया)	120	40.00
	कुल योग	**300**	**100.00**

डॉ० (संदीप कुमार)
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय
पचवस, बस्ती।

पूर्वोत्तर तालिका के विश्लेषण करने से यह तथ्य सामने आया कि, गोरखपुर जनपद के तहसील चौरी चौरा के टेरीकोटा उद्योग में संलग्न 'बाल–श्रमिकों'; की शिक्षा प्राप्त करने के दौरान, किन्ही कारणों से पढ़ाई–लिखाई बीच में छोड़ने की संख्या 40 प्रतिशत है जो कि; शिक्षा प्राप्त करने के सभी स्तरों में से सबसे अधिक है। प्रतिदर्श में सम्मिलित 38 प्रतिशत उत्तरदाता 'बाल–श्रमिक' अशिक्षित हैं, और वे कभी स्कूल नहीं गये हैं। 18 प्रतिशत उत्तरदाता 'बाल–श्रमिकों; में, इनकी संख्या सबसे अधिक है। सबसे निम्न स्थिति 'उच्च प्राथमिक' तथा 'पूर्व माध्यमिक' स्तर तक की शिक्षा ग्रहण करने वाले 'बाल–श्रमिकों' का प्रतिशत क्रमशः 3.67 एवं 0.33 प्रतिशत है। जिन

उत्तरदाता बाल–श्रमिकों को किन्हीं कारणों से बीच में पढ़ाई छोड़नी पड़ी है; उनमें से 90 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक' ऐसे हैं जो, अभी पढ़ना चाहते; परन्तु इनकी परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने के कारण, वे अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पा रहें हैं। यदि इन 'बाल–श्रमिकों' को उचित वातावरण के साथ, शिक्षा प्राप्त करने के सुविधा के अवसर उपलब्ध कराये जाएं, तो; पुनः शिक्षा प्राप्त करने को तैयार है।

'बाल–श्रमिकों' का स्कूल छूटने के कारण–

शोध कार्य में सम्मिलित किये गये सभी 'बाल–श्रमिकों' में से जो 38 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक' अशिक्षित थे, अर्थात वे कभी भी 'औपचारिक' अथवा 'अनौपचारिक' शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाये। परन्तु जिन 'बाल–श्रमिकों' ने प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर तक शिक्षा ग्रहण की है, और किन्हीं विशेष परिस्थितियों के कारण पढ़ाई–लिखाई (शिक्षा) बीच में ही छोड़नी पड़ी है। इन सभी 62 प्रतिशत 'बाल–श्रमिकों' से जब यह प्रश्न पूछा गया कि आप इस दुकान या व्यवसाय में कार्य के लिए आने से पूर्व, क्या आप स्कूल पढ़ने जाते थे? और स्कूल जाते थे तो, आपने स्कूल जाना क्यों बन्द कर दिया? इस सम्बन्ध में इन 'बाल–श्रमिकों' से प्राप्त किये गये आँकड़ों को, निम्नलिखित तालिका में आँकड़ों को वर्गीकृत करके दर्शाया गया है–

उत्तरदाता 'बाल–श्रमिकों द्वारा शिक्षा छोड़ने का कारण

क्रम सं०	बाल–श्रमिकों द्वारा बताये गये कारण	संख्या	प्रतिशत
1.	फीस न जमा हो पाने के कारण	25	13.44
2.	पढ़ने में मन न लगना	32	17.20
3.	बार–बार फेल हो जाना	35	18.81
4.	माता–पिता की लापरवाही	29	15.59
5.	पढ़ने के लिए समय न मिल पाने के कारण	65	34.95
	कुल योग	**186**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से यह तथ्य प्रकट होते हैं कि, समग्र में सम्मिलित किये गये बाल–श्रमिकों में से 124 (62 प्रतिशत) 'बाल–श्रमिक', जो किसी न किसी कारण से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सके है; इनमें से 34. 95 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक', बताते हैं कि, उन्हें पढ़ने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है; जबकि 18.81 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक' अपनी पढ़ाई इसलिए छोड़ दिये, क्योंकि वे बार–बार अपनी कक्षा में फेल हो जाते हैं। 15.59 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक' बताते हैं कि, वे अपनी पढ़ाई माता–पिता की लापरवाही के कारण (जिसमें मुख्यतः पारिवारिक कलह आदि) को जिम्मेदार ठहराते हैं। जबकि 17.20 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक' ऐसे भी मिले, जिन्हें पढ़ाई करने या शिक्ष ग्रहण करने में मन नहीं लगता है। सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह सामने आया कि, सिर्फ 13.44 प्रतिशत

'बाल–श्रमिक' ऐसे मिले, जिन्होंने बताया कि उनके माता–पिता उनके स्कूल की फीस नहीं दे सकते है; जिसके कारण, वे पढ़ाई पूरी नहीं कर सकते।

क्या आपके माता–पिता व अभिभावक आपके पढ़ाई का खर्च वहन कर सकते हैं–

शोध कार्य में सम्मिलित किये गये 300 'बाल–श्रमिकों' में से 186 (62 प्रतिशत) 'बाल–श्रमिक', जो विभिन्न कारणों से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सके थे, अथवा बीच में ही उन्हें अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी तथा 114 (38 प्रतिशत) 'बाल–श्रमिक', जो अशिक्षित थे, जब इन सभी बाल–श्रमिकों से यह प्रश्न पूछा गया कि यदि आप पढ़ना चाहते हैं तो; क्या आपके माता–पिता अथवा अभिभावक पढ़ाई का खर्च वहन कर सकते हैं? साथ ही बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने से सम्बन्धित प्रेरणापरक बातें भी बतायी गयी कि, आजकल सरकारी शिक्षण संस्थानों में बहुत अधिक शुल्क नहीं देना पड़ता है। वास्तविकता का पता लगाने के लिए उन्हें यह भी बताया गया कि आपको या आपके अभिभावकों को पढ़ाई–लिखाई के खर्च में लगभग 100 रूपया महीना खर्च करना होगा; परन्तु सरकार आपको लगभग 50 रूपये महीने 'वजीफा' के रूप में पढ़नें के लिए देगी, यदि आप विद्यालय पढ़ने जाते हैं। यह सूचना, जब उन बच्चों को बताया गया तो; उसके उत्तर जो मुझे प्राप्त हुए हैं; उनका विवरण, अग्रलिखित तालिका में प्रदर्शित किया गया है–

'बाल–श्रमिकों' के अभिभावकों द्वारा पढ़ाई का खर्च वहन कर सकने का विवरण

क्रम सं०	क्या आपके माता–पिता या अभिभावक आपके पढ़ाई का खर्च वहन कर सकते हैं?	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	108	58
2.	नहीं	78	42
	कुल योग	**186**	**100.00**

उपरोक्त तालिका का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि 58 प्रतिशत 'बाल–श्रमिको' ने स्वीकार किया कि उनके माता–पिता अथवा अभिभावक पढ़ाई को खर्च वहन कर सकते हैं; जबकि 42 प्रतिशत 'बाल–श्रमिक' यह स्वीकारते हैं कि, उनके माता–पिता अथवा अभिभावक पढ़ाई का खर्च वहन नहीं कर सकते हैं। 42 प्रतिशत 'बाल–श्रमिकों में से 90.48 प्रतिशत 'बाल–श्रमिकों' ने यह बताया कि यदि हम स्कूल चले जाएंगे तो; हमारे घर का खर्च कैसे चलेगा? अर्थात् इसका तात्पर्य यह हुआ किय इन 'बाल–श्रमिकों' के माता–पिता अथवा अभिभावकों की अर्थिक स्थिति इतनी

खराब है कि, वे अपने बच्चों को सिर्फ स्कूल भेज सकें। क्योंकि 'सर्वशिक्षा अभियान' के तहत बच्चों से शिक्षण शुल्क तो लिया ही नहीं जाता है, बल्कि उन्हें किताब और दोपहर का भोजन भी मुहैया कराया जाता है।

संदर्भः–

- **मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ, 2005,** ''सामाजिक शोध व सांख्यिकीय'', विवेक प्रकाशन, जवाहरनगर दिल्ली।
- **रावत, हरिकृष्ण,** ''समाशास्त्र का विश्वकोष'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर व नई दिल्ली, 1999, पेज नं० 258
- **सिंह, (डॉ०) निशांत, 2006,** ''सामाजिक न्याय और सतत् विकास'', राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पेज नं० 151
- **शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश, 2006,** ''रिसर्च मेथडालॉजी'', पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर।

लेखः–

- **अर्चना श्रीवास्तव,** ''मानवता के नाम पर कलंक'', योजना, मई 2008, ''योजना भवन, भारत सरकार'' का प्रसार एवं विज्ञापन विभाग नई दिल्ली, पृ०सं० 21
- **अखिलेश आर्येन्दु,** ''बाल श्रमिकों की स्थिति; समस्या और समाधाऩ'' कुरूक्षेत्र, ''ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार'' का प्रकाशक विभाग, नई दिल्ली, मई 2006, पृ०सं०–14